संपादकीय

फर्जी दावे से राष्ट्रीय प्रतिष्ठा को आंच

दिल्ली में आयोजित, भारत की महत्वाकांक्षी वैश्विक एआई समिट की शुरुआत में एक प्राइवेट यूनिवर्सिटी द्वारा विदेशी रोबोट को अपनी खोज बताकर किए दावे ने देश को असहज किया। ग्लोबल साउथ के देशों का नेतृत्व कर रहे भारत की तरक्की को लेकर अकसर मीन-मेख निकालने वाले पश्चिमी मीडिया को ग्रेटर नोएडा स्थित गलगोटिया यूनिवर्सिटी के कृत्य ने नुक्ता चीनी का एक और मौका जरूर दे दिया। जिसको लेकर पश्चिमी मीडिया में खासी चर्चा हुई। यहां एक निष्कर्ष यह भी निकला कि तकनीकी शिक्षा में निजी क्षेत्रों को मौका मिलने का किस हद तक दुरुपयोग भी किया जा सकता है। यह भी कि मौलिक गुणवत्ता से समझौता करके हम देश का कैसा भविष्य तैयार कर रहे हैं। यह घटना म देश में तेजी से बढ़ती उस नकारात्मक प्रवृत्ति का हश्र भी बताता है, जिसमें आनन-फानन में शॉर्टकट से सफलता की तलाश रहती है। विडंबना यह है कि इस घटना ने वैश्विक एआई सम्मेलन के परिप्रेक्ष्य में कई सवाल पैदा किये। सवाल उठाया कि भारत आज व्यवहार में एआई व रोबोटिक्स के अनुसंधान में कहां खड़ा है? आखिर गलगोटिया यूनिवर्सिटी के नीति-नियंताओं ने यह क्यों नहीं सोचा कि चीन निर्मित एक रोबोट को अपनी उपलब्धि बताने से देश की प्रतिष्ठा को आंच आएगी? अब यूनिवर्सिटी की तरफ से सफाई दी जा रही है कि उसने रोबोट के निर्माण का दावा नहीं किया। वहीं दूसरी ओर उन सरकारी अधिकारियों की भी जवाबदेही तय की जानी चाहिए, जिन्होंने बिना जांच-पड़ताल के विश्वविद्यालय को एआई समिट में स्टॉल लगाने की अनुमति दी। निश्चित रूप से भारत ने पिछले कुछ वर्षों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित तकनीक व रोबोटिक उत्पादन के क्षेत्र में ऊंची छलांग लगाई है। युवा शक्ति के देश भारत ने एआई के क्षेत्र में अमेरिका व चीन के बाद अपना तीसरा स्थान बनाया है। जिसकी पुष्टि अंतर्राष्टीय मानक संस्थाओं ने भी की है। लेकिन एक विरोधाभासी हकीकत यह है कि भारत दुनिया का सबसे बड़ी आबादी का देश है, जहां श्रम शक्ति प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। निस्संदेह, ऐसे वक्त में जब कृषि से लेकर चिकित्सा तक और उत्पादन के क्षेत्र में एआई व रोबोटिक्स की दखल बढ़ रही है, प्रचुर श्रमशक्ति की उपलब्धता के बावजूद भारत को समय के साथ कदमताल करनी होगी। हमें एआई व रोबोटिक्स को अपनाना ही होगा। लेकिन सावधानी के साथ ताकि यह नौकरी खाने वाला बनने के बजाय नौकरी देने वाला बने। इसके साथ ही हमें एआई जगत में अपनी विश्वसनीयता भी कायम करनी होगी। ताकि फिर किसी गलगोटिया यूनिवर्सिटी की खुरापात से देश की फजीहत न हो। बल्कि हमारा शोध व विकास का तंत्र इतना मजबूत हो कि फिर हमारे किसी संस्थान को विदेशी उत्पाद को अपना नवाचारी उत्पाद बताने की जरूरत न पड़े। अन्यथा न केवल एआई समिट बल्कि देश की गरिमा को भी आंच आ सकती है। देश में शोध-अनुसंधान से जुड़े संस्थानों व विश्वविद्यालयों को सोचना होगा।

विनोद शर्मा, संपादक

मेला अलबेला और सृजन के यक्ष प्रश्न

पीएम मोदी ने अपने पहली किताब 'आपातकाल में गुजरात' उस जमाने में लिखी थी, जब वह युवा थे और गुजरात में आपातकाल के खिलाफ भूमिगत संघर्ष कर रहे थे। पांचजन्य का दावा है कि पीएम मोदी ने अभी तक के प्रधानमंत्रियों में सबसे ज्यादा किताबें लिखी हैं। अटल बिहारी वाजपेयी ने जहां 11 किताबें लिखी थीं, वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की किताबों की संख्या 23 (इसमें अन्य भाषाओं में अनुवाद भी शामिल) है। अकादमियां अक्सर साहित्य, कला, इतिहास या सांस्कृतिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करती हैं, न कि समकालीन नेताओं की जीवनी पर, जब तक कि उनके साहित्यिक या ऐतिहासिक योगदान बड़े न हों। लेकिन, प्रधानमंत्री मोदी ने साहित्य में जो कुछ रचनात्मक योगदान दिया, उस पर एक किताब तो गुजरात साहित्य अकादमी की ओर से छपनी बनती है।

अकादमी ने गुजराती, संस्कृत, हिंदी, कच्छी, सिंधी, और उर्दू में लगभग 500 किताबें अब तक छापी हैं। उसकी वेबसाइट पर जाकर खंगाल लीजिये, आपको सरदार पटेल नहीं मिलेंगे, गुजरात का कोई भी मुख्यमंत्री नहीं मिलेगा। अकादमी ने 2021 में शब्द सृष्टि दिवाली अंक पत्रिका छापी है, उसके कवर पर एक दर्जन चेहरों के साथ सरदार पटेल नमूदार हैं। लेकिन उन पर अलग से पुस्तक नहीं है। विश्व पुस्तक मेले में वैभव का प्रदर्शन पीएम मोदी के कट आउट के साथ जगह-जगह दिख रहा था। अधिकांश प्रकाशक हिंदूवादी-राष्ट्रवादी पुस्तकों के साथ नुमायां हैं। भारत मंडपम में सबसे विराट स्वरूप वाला 'भारतीय सैन्य इतिहास – वीरता और ज्ञान ञ्च 75' पैवेलियन देखकर कोई भी हैरान हो सकता है। यह सेना के शौर्य को प्रदर्शित करता एक शानदार थीम पैवेलियन है, जिसमें 'ऑपरेशन सिंदूर' जैसे सैन्य अभियानों को तोप और युद्धक विमान के मॉडल के साथ दर्शाया गया है। इसके आगे सारे स्टाल बौने से लगेंगे। इस पैवेलियन में विमर्श के वास्ते सेना के वरिष्ठ अधिकारी, डिफेन्स एक्सपर्ट भारत के शौर्य का बखान, और बीच-बीच पीएम मोदी की चर्चा करते दिखते हैं। एक हज़ार से ज्यादा प्रकाशक, और तीन हज़ार से अधिक स्टालों में बहुतेरे प्रकाशकों ने ब्रांड मोदी को इस पुस्तक मेले में बेचा है। मोदी के सेल्फी-प्वाइंट, मोदी के बैनर-पोस्टर-कटआउटों से पटा पड़ा है विश्व पुस्तक मेला। लेकिन, गुजरात साहित्य अकादमी में इतना सन्नाटा

क्यों? पटेल पर पुस्तक नहीं। पीएम मोदी पर भी एक किताब नहीं। विश्व पुस्तक मेले में गुजरात साहित्य अकादमी के स्टाल पर यह देखकर मैं हैरान हुआ। दो सौ किताबों के साथ लगभग आठ गुना दस फीट का छोटा-सा स्टाल। दो लोग बैठे। एक वैभवशाली प्रदेश की साहित्य अकादमी स्टाल एकदम उपेक्षित-सा। इस अकादमी की स्थापना कांग्रेसी मुख्यमंत्री माधव सिंह सोलंकी के कार्यकाल में 24 सितंबर, 1981 को हुई थी। गुजरात के शिक्षा सचिव समेत इसके 41 सदस्य हैं। वर्ष 2003 से 2015 तक यह संस्था बिना किसी अध्यक्ष के ख़रामा-ख़रामा चलती रही। वर्ष 2015 एक आईएएस भाग्येश झा को जब गुजरात साहित्य अकादमी का अध्यक्ष बनाया गया, उसे लेकर काफी विवाद हुआ। 2017 में पत्रकार विष्णु पांड्या गुजरात साहित्य अकादमी के अध्यक्ष बनाये गए। गुजरात साहित्य अकादमी में धन का संकट भी बताया जाता है। बाज़ दफा गुजरात साहित्य अकादमी और गुजरात साहित्य परिषद के बीच वर्चस्व को लेकर जंग छिड़ जाती है। गुजरात साहित्य परिषद् को अपनी विरासत पर नाज़ रहता है, 1936 में महात्मा गांधी इसके अध्यक्ष रह चुके थे। अकादमी ने गुजराती, संस्कृत, हिंदी, कच्छी, सिंधी, और उर्दू में लगभग 500 किताबें अब तक छापी हैं। उसकी वेबसाइट पर जाकर खंगाल लीजिये, आपको सरदार पटेल नहीं मिलेंगे, गुजरात का कोई भी मुख्यमंत्री नहीं मिलेगा। अकादमी ने 2021 में शब्द सृष्टि दिवाली अंक पत्रिका छापी है, उसके कवर पर एक दर्जन चेहरों के साथ सरदार पटेल नमूदार हैं। लेकिन उन पर अलग से पुस्तक नहीं है। अलबत्ता, गुजरात साहित्य अकादमी ने तुलसी, कबीर, गांधी, अम्बेडकर, औरंगज़ेब, श्यामजी कृष्ण वर्मा, सत्यजीत रे, महिला संत भक्तोनी पर पुस्तकें छापी हैं। क्या गुजरात साहित्य अकादमी नरेंद्र दामोदरदास मोदी के साहित्यिक अवदान से अनभिज्ञ है? पीएम मोदी एक कवि भी हैं। नरेंद्र मोदी की कविताओं पर एक पुस्तक है–'ए जर्नी – पोयम्स बाय नरेंद्र मोदी।' इस पुस्तक में भी पीएम मोदी की गुजराती में लिखी गई कविताओं का अंग्रेजी अनुवाद रवि मंथा ने किया है।

इस पुस्तक की भूमिका खुद मोदी ने लिखी है। रूपा पब्लिकेशन से प्रकाशित इस पुस्तक संग्रह में नरेंद्र मोदी द्वारा विभिन्न विषयों पर लिखी गई 67 कविताएं हैं। पीएम मोदी की एक और पुस्तक है, 'लैटर्स टू मदर'। मां को लिखे गए ख़त गुजराती में हैं, और इनका अंग्रेजी में अनुवाद किया है भावना सुमाया ने। इस पुस्तक में बताया गया है कि नरेंद्र मोदी जब युवा थे, तो उनको हर रात सोने से पहले देवी मां को डायरी में एक पत्र लिखने की आदत हो गई थी। इस पत्र में वे मां को 'जगत जननी' के रूप में संबोधित करते थे। इन पत्रों के विषय अलग-अलग हुआ करते थे। उभरे हुए दुख थे, क्षणभंगुर खुशियां, स्मृतियां आदि। मोदी के लेखन में एक नौजवान का उत्साह और बदलाव लाने का जुनून था। बताते हैं, नरेंद्र मोदी कुछ महीनों बाद डायरी के पन्ने फाड़कर जला देते थे।

मातृ-वियोग ने प्रकृति से जोड़ा था पंत को

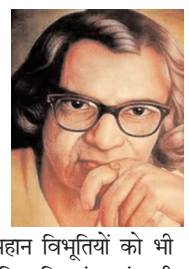

सुमित्रानंदन पंत, भारतीय छायावादी काव्यधारा के महान कवि का जीवन प्रकृति से गहरे जुड़ा हुआ था। उनकी कविता में मातृवियोग, शांति, और सौंदर्यबोध की गहरी छाया मिलती है, जो उन्हें कवि के रूप में स्थापित करती है। समय के साथ समाज महान विभूतियों को भी विस्मृत कर देता है। यह वर्ष महाकवि सुमित्रानंदन पंत की 125वीं जयंती का था लेकिन साहित्य-जगत में उन्हें विशेष याद नहीं किया गया। 28 दिसंबर उनकी पुण्यतिथि है। पाठक पंत की दो कविताओं के उद्धरण प्राय– दिया करते हैं। एक है, 'वियोगी होगा पहला कवि% और दूसरा 'छोड़ द्रुमों की मृदु छाया'। दूसरे उदाहरण से आवृत्तिपरक टेक पंक्ति 'भूल अभी से इस जग को!' प्राय– छोड़ दिया जाता है। इससे कवि के व्यक्तित्व के साथ बहुत अन्याय होता है। कविता का प्रथम पद इस प्रकार है- निस्संदेह, कवि द्रुमों की छाया से, प्रकृति के श्रव्य-दृश्य रूप से प्यार करता है। वह इस रूप से माया नहीं तोड़ना चाहता। बाला के बाल-जाल में लोचन नहीं उलझाना चाहता। लेकिन कविता में बार-बार आने वाला 'अभी से' कहता है 'अभी नहीं, आगे देखा जाएगा।' पंत का काव्य प्रमाण देता है कि उन्होंने प्रकृति को तो भले ही कभी न छोड़ा हो लेकिन 'बाला के बाल-जाल में लोचन' तो उलझाए ही है, इसका साक्ष्य पल्लव के प्रगीत भी देते हैं, और गुंजन की 'अप्सरा' कविता भी। 20 मई, 1900 में कूर्मांचल के कौसानी ग्राम में जन्मे सुमित्रानन्दन पन्त के व्यक्तित्व को पर्वतीय प्राकृतिक सौन्दर्य ने एक विशिष्टता प्रदान की थी। कवि के जीवन की यह विडंबना है कि उनके जन्म के 6 घंटे बाद ही उनकी मां का देहांत हो गया था। जन्म के साथ मां की मृत्यु के जिस शोकप्रद संवेदन को उन्होंने सर्वप्रथम अनुभव किया, उसी ने उन्हें अन्तर्मुखता प्रदान की। मां की स्नेहिल छाया से वंचित उनकी अन्तर्मुखी चेतना ने प्रकृति में सुखद मातृत्व का ही प्रतिबिम्ब देखा। तब एकान्त में प्रकृति-साहचर्य ही उन्हें प्रिय था। मातृ-हीन बालक का यह प्रकृति-अनुराग ही अंततः कविता में ढला है। कल्पना काव्य-रचना की पहली सीढ़ी है। पन्त ने भी काव्य-सौध के आरोहण के लिए इसी सोपान पर चरण रखे थे परन्तु उनकी काव्य-दृष्टि प्रकृति से इस रूप में सम्मोहित हो चुकी थी कि उनकी कल्पना पग-पग पर प्रकृति-लास्य के अतिरिक्त कुछ नहीं देखती थी। प्रकृति-प्रियता ने उनके व्यक्तित्व को सुरुचि, सुकुमारता एवं सौन्दर्यबोध के विकसित आयाम तो प्रदान किए ही, एकाकी जीवन का अभिशाप बनने वाली निराशा, घुटन और कुण्ठा से भी उन्हें मुक्त किया। लेकिन जीवन के सूनेपन में एक शाश्वत पीड़ा और तरल वेदना उनके व्यक्तित्व का स्थायी अंग बन गयी। इसीलिए उन्होंने वियोग को काव्य का प्रेरक तत्त्व बताया। किशोरावस्था में पन्त प्रकृति और काव्य में जितने तल्लीन रहे, शेष संसार से उतने ही विमुख। वे लिखते हैं – 'तब मैं छोटा-सा चंचल भावुक किशोर था, मेरा काव्य-कण्ठ अभी नहीं फूटा था। पर प्रकृति मुझ मातृहीन बालक को कवि जीवन के लिए मेरे बिना जाने ही, जैसे तैयार करने लगी। प्रकृति उनकी आराध्या, सहचरी एवं शिक्षिका औए चिरन्तन जीवन-सत्यों एवं मानवीय तथा दिव्य रहस्याच्छादित सौन्दर्य की परिचायिका है।' वे कहते हैं, 'कविता करने की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति निरीक्षण से मिली है, जिसका श्रेय मेरी जन्मभूमि कूर्मांचल प्रदेश को है। पंत ने जीवन-मृत्यु और निर्माण-विनाश का युगपत संबंध दिखाते अपनी सर्वाधिक प्रसिद्ध कविता 'परिवर्तन' में पंत की काव्य-यात्रा चारों छायावादी कवियों में सबसे लंबी थी इसलिए समय के साथ उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियतलैंड नेहरू पुरस्कार और ज्ञानपीठ जैसे पुरस्कार प्राप्त हुए; गांधी, मार्क्स और अरविंद के चिंतन को उन्होंने काव्य में वाणी दी तथा लोकायतन और सत्यकाम जैसे महाकाव्यों की रचना की लेकिन किशोरावस्था में इस मातृ-विहीन बालक ने प्रकृति के सहचार्य में जिस तुतलाहट को 'वीणा' और 'पल्लव' के प्रगीतों में व्यक्त किया है, उसका आवेग ही उनकी ख्याति का सबसे बड़ा आधार है। उनके ग्रन्थों की संख्या 50 के लगभग है लेकिन अनेक आलोचकों की दृष्टि में पंत का मधुरतम काव्य-कंठ पल्लव में मुखर हुआ है। 'वीणा-काल' में पन्त ने 'प्रकृति की छोटी-मोटी वस्तुओं को कल्पना की तूलि से रंग कर काव्य की सामग्री इकट्ठी की है'। प्रकृतिकपरक कविताओं के इस संग्रह को उन्होंने अपना दुधमुंहा प्रयास कहा है।

जिला कांग्रेस अध्यक्ष के नेतृत्व में एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

पंधाना में कांग्रेस का विरोध प्रदर्शन, बढ़ती महंगाई के खिलाफ एवं किसानों की ऋण वसूली की निर्धारित तिथि को आगे बढ़ाए जाने हेतु

पीपुल्स प्रवक्ता खंडवा/पंधाना।

जिला कांग्रेस अध्यक्ष उत्तमपाल सिंह के नेतृत्व में कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा सोमवार को पंधाना में केंद्र एवं राज्य सरकार की नीतियों के विरोध में जोरदार प्रदर्शन किया गया। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने रैली निकालकर गैस सिलेंडर की लगातार बढ़ती कीमतों, बिजली दरों में अप्रत्याशित वृद्धि तथा पेट्रोल-डीजल की कमी को लेकर अपना रोष व्यक्त किया। प्रदर्शन के पश्चात कांग्रेसजनों ने राज्यपाल महोदय के नाम एसडीएम दिनेश सावले को ज्ञापन सौंपते हुए मांग की कि आम जनता पर बढ़ते आर्थिक बोझ को तत्काल कम किया जाए। नेताओं ने कहा कि महंगाई लगातार बढ़ रही है, जिससे आम नागरिकों का जीवन यापन मुश्किल होता जा रहा है।

इस समस्या के साथ ही भगवन्त सागर (सुक्ता डेम) से कमाण्ड क्षेत्र के किसानों को शीघ्र पानी उपलब्ध कराने एवं पंधाना तहसील के दीवाल क्षेत्र में पेयजल समस्या के निराकरण के संबंध में भी ज्ञापन सौपा गया।पंधाना क्षेत्र की सुक्ता नहर परियोजना से जुड़े गांवों में वर्तमान समय में रबी की फसल पकने की अवस्था में है, किन्तु पानी की अनुपलब्धता के कारण फसल सूखने की स्थिति में पहुंच चुकी है। यदि शीघ्र पानी उपलब्ध नहीं कराया गया, तो किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ेगा।ज्ञात हो कि इस वर्ष कमाण्ड क्षेत्र के लिए निर्धारित 5 पानी के स्थान पर केवल 4 पानी ही दिए गए है, जिसके कारण समय से पूर्व ही जल संकट उत्पन्न हो गया है। हर गाँव मे फसल फसल बचाने के लिए किसान ट्यूबवेल करवा रहा है। इसके अतिरिक्त, पंधाना ब्लॉक के अधिकांश गांवों, विशेषकर दीवाल क्षेत्र में पेयजल की अत्यंत गंभीर समस्या बनी हुई है। ग्रामीण जनता एवं पशुओं के लिए भी पेयजल की भारी कमी हो रही है, जिससे जनजीवन प्रभावित हो रहा है। इस अवसर पर जिला कांग्रेस अध्यक्ष उत्तमपाल सिंह ने कहा कि यदि सरकार ने जल्द ही इन समस्याओं का समाधान नहीं किया तो

कांग्रेस पार्टी चरणबद्ध आंदोलन करेगी। प्रदर्शन में बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता एवं स्थानीय नागरिक उपस्थित रहे। पंधाना विधानसभा प्रत्याशी रुपाली बारे ने कहा कि सरकार द्वारा घरेलू गैस सिलेंडर के मूल्यों में की गई वृद्धि ने आम आदमी की रसोई का बजट बिगाड़ दिया है।कमरतोड महंगाई के कारण गरीब और मध्यम वर्गीय परिवार का जीवन निर्वाह कठिन हो गया है।राज्य सरकार द्वारा प्रस्तावित बिजली की दरों में की गई भारी बढ़ोतरी जनता पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ है।

पीड़ित परिवारों की आवाज बनीं महापौर, सूरजकुंड अतिक्रमण मामले में न्याय के लिए उठाया ठोस कदम

सूरजकुंड क्षेत्र वासियों की समस्या को लेकर महापौर ने रेलवे अधिकारी के साथ कलेक्टर से की चर्चा

पीपुल्स प्रवक्ता खंडवा।

शहर के सूरजकुंड वार्ड में रेलवे के निर्माणाधीन कार्य के चलते अतिक्रमण प्रभावित परिवारों के सामने खड़ी हुई समस्याओं के बीच महापौर श्रीमती अमृता अमर यादव एक मजबूत जनप्रतिनिधि के रूप में सामने आई हैं। उन्होंने न केवल प्रभावित परिवारों की पीड़ा को गंभीरता से लिया, बल्कि जिला प्रशासन के समक्ष उनके हक और आजीविका का मुद्दा मजबूती से उठाते हुए न्याय दिलाने की पहल भी की। समाजसेवी व प्रवक्ता सुनील जैन ने बताया कि सूरजकुंड क्षेत्र में रेलवे विभाग द्वारा चल रहे निर्माण कार्य के दौरान कई परिवार अतिक्रमण की जद में आ रहे हैं।

इन परिवारों के सामने अपने आशियाने और रोजगार दोनों को लेकर चिंता की स्थिति बन गई है। ऐसे समय में महापौर अमृता यादव ने संवेदनशीलता दिखाते हुए प्रभावित नागरिकों के पक्ष में खुलकर आवाज उठाई और जिला कलेक्टर से विस्तृत चर्चा की। साथ ही रेलवे अधिकारियों को भी हट धर्मी नहीं दिखाने के निर्देश भी दिए। महापौर ने कलेक्टर के साथ हुई बैठक में स्पष्ट रूप से कहा कि किसी भी प्रकार की कार्रवाई केवल

कानूनी प्रक्रिया तक सीमित न रहे, बल्कि उसमें मानवीय दृष्टिकोण भी झलकना चाहिए। उन्होंने यह भी जोर दिया कि जिन परिवारों की आजीविका इस क्षेत्र से जुड़ी हुई है, उनके पुनर्वास और मुआवजे की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए, ताकि वे अचानक बेघर या बेरोजगार न हो जाएं। प्रवक्ता सुनील जैन ने बताया कि महापौर अमृता अमर यादव के के इस हस्तक्षेप को गंभीरता से लेते हुए कलेक्टर ने सिटी मजिस्ट्रेट श्री बजरंग बहादुर को निर्देशित किया कि अतिक्रमण क्षेत्र को स्पष्ट रूप से चिन्हित कर नियमानुसार कार्रवाई की जाए। साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाए कि जिन प्रभावित व्यक्तियों के पास भूमि संबंधी वैध दस्तावेज उपलब्ध हैं। उन्हें रेलवे विभाग द्वारा उचित मुआवजा प्रदान किया जाए। बैठक में इस बात पर भी सहमति बनी कि पूरी कार्रवाई पारदर्शिता और समन्वय के साथ की जाएगी, ताकि किसी भी व्यक्ति के साथ अन्याय न हो। प्रशासन ने यह भरोसा दिलाया कि प्रत्येक मामले को गंभीरता से जांचा जाएगा और प्रभावितों के अधिकारों की रक्षा की जाएगी। महापौर अमृता अमर यादव के इस सक्रिय और संवेदनशील रवैये से प्रभावित परिवारों में एक नई उम्मीद जगी है। लंबे समय से अपनी समस्याओं को लेकर चिंतित लोगों को अब विश्वास होने लगा है कि उनकी आवाज सुनी जा रही है और उनके साथ न्याय होगा। सुनील जैन ने बताया कि महापौर श्रीमती यादव के साथ इस अवसर पर जिला अध्यक्ष राजपाल सिंह तोमर, जिला महामंत्री धर्मेंद्र बजाज, जिला उपाध्यक्ष प्रियांशु चौरे, एमआईसी सदस्य सोमनाथ काले, वार्ड पार्षद संतोष सारवान, वेदप्रकाश मालाकार सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे। कुल मिलाकर, सूरजकुंड अतिक्रमण मामले में महापौर की सक्रियता ने यह स्पष्ट कर दिया है कि जनप्रतिनिधि यदि संवेदनशीलता और दृढ़ता के साथ काम करें, तो आम जनता की समस्याओं का समाधान संभव है।

प्रधानमंत्री द्वारा प्रेषित मन की बात सुनकर जनता के मन में देश के प्रति कुछ करने की इच्छा जागृत होती है

पीपुल्स प्रवक्ता खंडवा।

देश के पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी है जिन्होंने अपने कार्यकाल में नए आधुनिक भारत का निर्माण किया है। मन की बात के माध्यम से प्रधानमंत्री श्री मोदी प्रतिमाह करोड़ो लोगों से रूबरू होते हैं। मन की बात के माध्यम से देश में चल रही ताजा गतिविधियों के साथ देश के विकास और देश की आवश्यकता को लेकर प्रधानमंत्री चर्चा करते हैं। समाजसेवी व प्रवक्ता सुनील जैन ने बताया कि रविवार को देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने 132 वें एपिसोड को संबोधित करते हुए पर्यावरण की रक्षा के लिए एक पेड़ मां के नाम के साथ ही जल ही जीवन है को लेकर इस भीषण गर्मी में जल संरक्षण को लेकर छोटी से बड़ी योजनाएं बनाकर जल का संरक्षण करना है, जो आज की आवश्यकता है की बात रखी। देश के वैज्ञानिक एवं युवाओं को लेकर भी अपनी बात

रखी। प्रवक्ता सुनील जैन ने बताया कि प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के मन की बात के कार्यक्रम को करोड़ो जनता के साथ मुख्यमंत्रीगण, सांसद विधायकगण, मंत्री एवं पार्टी के बुथ स्तर पर उपस्थित लाखों कार्यकर्ता भी एक कार्यक्रम के तहत सुनते हैं। सुनील जैन ने बताया कि रविवार को प्रसारित मन की बात कार्यक्रम को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव इंदौर विधानसभा क्रमांक-1 स्थित सम्राट अशोक मंडल, वार्ड क्र. 15 के बूथ क्र. 249 एयरपोर्ट पर एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक हेमंत खण्डेलवाल भोपाल मध्य विधानसभा के अरेरा मंडल के बूथ क्रमांक-229 पर कार्यकर्ताओं के साथ सुना। भाजपा जिला अध्यक्ष राजपाल सिंह तोमर, जिला पंचायत अध्यक्ष पिंकी सुदेश वानखेडे,खंडवा विधायक कंचन मुकेश तनवे ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय मंडल अध्यक्ष रोहित मिश्रा द्वारा आयोजित इंदिरा चौक स्थित भाजपा कार्यालय मैं सभी मंडल पदाधिकारीयो एवं कार्यकर्ताओं के साथ सुना सांसद ज्ञानेश्वर पाटिल ने बुरहानपुर, महापौर अमृता अमर यादव ने अटल बिहारी वाजपेई मंडल अंतर्गत वार्ड क्रमांक 27, श्री धुनीवाले दादाजी वार्ड के बूथ क्रमांक 226 पर अनुसूचित जाति मोर्चा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सहभागिता कर सुना। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष श्री तोमर ने कहा कि मन की बात के माध्यम से प्रधानमंत्री मोदी जी विभिन्न क्षेत्रों के प्रसंगो के जरिए छिपी हुई।

महावीर जयंती पर सद्भावना मंच व्दारा बाटें गये साकोरे

पीपुल्स प्रवक्ता खंडवा।

भगवान महावीर जी ने जैन धर्म के लिए 5 सिद्धांत दिए, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। जो समृद्ध जीवन और आंतरिक शांति की ओर ले जाते हैं। इन 5 सिद्धातों पर टिका था भगवान महावीर का जीवन, इनमें से एक भी अपना लिया तो बदल जाएगा जीवन। इन्हीं सिद्धांतों को अपनाते हुए सदभावना मंच व्दारा इस भीषण गर्मी के दिनों में शहर एवं ग्रामीण क्षेत्रों में पक्षियों के संरक्षण के लिए पक्षी बचाओ अभियान के तहत इंदौर रोड किशोर कुमार स्मारक के पास सदभावना हाल से सोमवार को संस्थापक प्रमोद जैन के नेतृत्व में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में निवासरत व्यक्तियों तथा राहगीरों को निश्शुल्क सकोरे बांटे गयें। यह जानकारी देते हुए मंच के निर्मल मंगवानी ने बताया कि इन दिनों तेज गर्मी में कंठ सूखने पर जब पक्षी छतों पर आते हैं तो इन्हें पानी नहीं मिलता। इसीलिये नगर की सेवाभावी संस्था सदभावना मंच व्दारा पक्षियों एवं चिड़ियों को बचाने के लिये छतों व आंगन में पानी भरकर रखने की अपील के साथ पानी के जल पात्र सकोरे नि:शुल्क वितरित किये गये। इस अवसर मंच संस्थापक प्रमोद जैन, पूर्व डीएसपी आनंद तोमर, डॉ जगदीशचंद्र चौरे, सुनील सोमानी, ओम पिल्लै, केबी मनसारे, गणेश भावसार, सुनिल जैन, कैलाश शर्मा, डॉ एमएम कुरेशी, अर्जुन बुंदेला, निर्मल मंगवानी, नानक बजाज, नारायण फरकले, मुरली कोडवानी, राधेश्याम शाक्य, मनीष गुप्ता, नदीम रायल, सुभाष मीणा, कैलाश पटेल आदि व्दारा साकोरे का वितरण किया गया।

स्वामी, भाग्यमीडिया पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए प्रकाशक, मुद्रक राजेश शर्मा द्वारा प्रदेश वॉच मीडिया ग्रुप 11 प्रेस काम्पलेक्स जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित कर, जी-11 प्रथम तल गोयल निकेत जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित, पिन-462011, संपादक : विनोद शर्मा, फोन नं. 0755-4512708, पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार सभी मामलों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा । RNI No. MPHIN/2016/68059